p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 04
February 2016

संयुक्त राष्ट्र संघ व भारत

सपना

रिसर्च स्कॉलर
राजनीतिक विज्ञान विभाग
म.द.वि., रोहतक

शोध आलेख सारः प्रस्तुत शोध प्रपत्र में मैंने संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया है तथा उन सभी बिन्दुओ पर चर्चा की है जिनके माध्यम से भारत, यू0एन0ओ0 में अपनी भूमिका निभाता रहा है। इसके साथ ही मुख्य चर्चित विषय संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में सुधार करने को भी मैंने स्पष्ट किया है व इस पर भारतीय विचार बताया है।

मुख्य शब्दः संयुक्त राष्ट्र संघ, निःशस्त्रीकरण, सुरक्षा परिषद, नस्लभेद, उपनिवेशवाद।

भूमिकाः

विश्व को भावी युद्ध की विभिषिका से बचाने के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सभी राष्ट्रों ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ नामक संस्था की स्थापना की। संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य के समान भारत की मूल नीति भी युद्ध विरोधी एवं शांतिप्रियता की होने के कारण भारत इस संस्था का प्रारंभिक सदस्य बना और आज भी इसके अनेक संस्थानों व समितियों का सक्रिय सदस्य है। संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी उद्देश्यों व इसके सिद्धान्तों को भारत ने प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय मंच से समर्थन दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी उद्देश्य भारतीय विदेश नीति के उद्देश्यों व सिद्धान्तों से मेल खाते हैं तथा इन दोनों में किभी भी प्रकार का कोई विरोधभाष नहीं है। भारतीय संविधान में भी इस उद्देश्य को शामिल करते हुये अनुच्छेद 51 में कहा गया है कि राज्य अंन्तराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा की अभिवृद्धि का प्रयास करेगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून व संस्थाओं के प्रति आदर भाव बढाने का प्रयास करेगा। इस प्रकार अपने संविधान के निर्देशक तत्वों ने इस प्रावधान को शामिल कर भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति अपनी प्रबल आस्था प्रकट की है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न अंगों में भारत की भूमिकाः

जैसा कि पहले भी बताया गया है कि भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के संस्थापक सदस्यों में से एक है तथा भारत ने यू.एन.ओ. के विभिन्न अंगों में अपना स्थान बनाकर एक सक्रिय सदस्य की भूमिका निभाई है। भारत अब तक आठ बार सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य रहा है। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र सामायिक व आर्थिक परिषद, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आयोग, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम आदि का भी सदस्य व अध्यक्ष रह चुका है।

भारत यूनेस्को का एक संस्थापक सदस्य है तथा इसके सभी सम्मेलनों में भारत ने शामिल होकर सक्रिय भूमिका निभाई है। इसके अलावा विश्व स्वास्थ्य संगठन के सभी कार्यक्रमों को भारत ने बड़ी तन्मयता से लागू किया है। संयुक्त राष्ट्र बाल आपात कोष का प्रादेशिक कार्यालय भारत में ही है। अंकताड़ का द्वितीय सम्मेलन भारत में ही मार्च 1968 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न अंगों व संस्थाओं में भारतीयों ने अपनी सेवाओं को प्रदान कर महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित संयुक्त राष्ट्र महासभा के आठवें अधिवेशक की अध्यक्षता निर्वाचित हुई। डॉ. राधाकृष्णन व मौलाना अब्दुल कलॉम यूनेस्को के प्रधान रह चुके हैं। श्री दलबीर भण्डारी अन्तराष्ट्रीय न्यायालय में न्यायाधीश रह चुके हैं। डॉ. नागेन्द्र सिंह अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के दुख्य न्यायाधीश रह चुके हैं। इस प्रकार भारत ने यू.एन.ओ. के अंगों व संस्थाओं ने महत्वपूर्ण व सक्रिय भूमिका निभाई है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की नीतियों के क्रियान्वयन में भारत की भूमिकाः

संयुक्त राष्ट्र संघ की मुख्य नीतियां जैसे विश्व—शांति, निःशस्त्रीकरण, साम्राज्यवाद, एवं उपनिवेशवाद का उन्मूलन, जातिभेद, नस्लभेद आदि का विरोध को क्रियान्ति करने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

भारत ने स्वतंत्र होने से पूर्व व पश्चात् सभी मंचों से विश्व से उपनिवेशवाद के उन्मूलन की मांग की है। भारत ने उपनिवेशवाद के उन्मूलन की मांग की है। भारत ने

उपनिवेशों और वहां की जनता को स्वतंत्र करने की मांग वाला एक प्रस्ताव यू.एन. महासभा में साथी राष्ट्रों के साथ 1950 में पेश किया, जिसे पुरजोर समर्थन के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्वीकार कर लिया। भारत के प्रयासों से ही 1950–60 के दशक में अनेक उपनिवेश स्वतंत्र हुए।

भारत ने नस्लवाद व रंगभेद के विरोध की नीति को महात्मा गांधी के काल से ही अपनाया है। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में इसी नीति के खिलाफ विरोध आन्दोलन चलाया था।

भारत ने 1946 में दक्षिण अफ्रीका के मूल निवासियों के साथ हो रहे भेदभाव के विरूद्ध आवाज उठाते हुए महासभा के प्रथम अधिवेशन में ही जातिवाद व नस्लभेद का प्रश्न उठाया। इसके अलावा प्रिटोरिया से अपने उपायुक्त को वापिस बुलाकर भारतीय प्रतिक्रिया देते हुए भारत ने 1986के राष्ट्रमण्डलीय खेलों का बहिष्कार किया। इस प्रकार भारत ने सदैव नस्लवाद का विरोध किया है।

भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ के निःशस्त्रीकरण के प्रयासों का सदैव समर्थन किया है ताकि विश्वशांति व भाईचारे को बनाये रखा जा सके। भारत ने 1963 की आंशिक परमाणु हथियार रोक संधि पर हस्ताक्षर किये तथा विश्व से परमाणु हथियारों के उन्मूलन की व्यापक योजना अपनाने का विचार रखा। हांलाकि भारत ने 1963 की एन.पी.टी. तथा 1996 की सी.टी.बी.टी. संधि का अभी तक समर्थन नहीं किया है। जिससे विश्व जनमत भारत के विरूद्ध भी हुआ है। किन्तु भारत इन दोनों संधियों को भेदभावपूर्ण मानता है। इसलिए इनका विरोध करता है।

इस प्रकार उपरलिखित तथ्यों के अवलोकन से हम समझ सकते हैं कि भारत ने यू.एन.ओ की नीतियो में पूर्ण आस्था प्रकट की है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति स्थापना कार्यों में भारत की भूमिकाः–

जैसा कि हम जानते हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ का मूल उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा बनाये रखना तथा अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान करना है किन्तु फिर भी विश्व का कोई न कोई हिस्सा युद्ध व संघर्ष की विभिषिका झेल रहा होता है। इस

कारण संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका शांति स्थापना के उद्देश्य से और महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत ने सदैव संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति स्थापना कार्यों में सहयोग किया है तथा विभिन्न अभियानों में अपने सैनिकों व सहायक एवं सामान भेजा है।

कोरिया संकट 1950 के समय भारत ने एक महत्वपूर्ण जिम्मेवारी निभायी तथा समाधान करवाया। इसके अलावा हिन्द–चीन की समस्या में भी भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसके साथ ही कुवैत समस्या, कम्बोडिया समस्या, संयुक्त राष्ट्र के अन्य मिशनों में भी भारत ने मुख्य भूमिका निभाई है।

संयुक्त राष्ट्र में सुधार का मुद्दा व भारतः–

भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ क प्रत्येक कार्यों व उद्देश्यों को समर्थन किया है किन्तु साथ ही संयुक्त राष्ट्र की कुछ खामियों को भी समय–समय पर उजागर किया है क्योंकि पश्चिमी महाशक्तियों ने संयुक्त राष्ट्र संघ को सदैव अपने हितों के लिए प्रयोग करने का प्रयास किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के समय महशक्तियों ने वीटो की शक्तियाँ करते हुये यू0एन.ओ. की सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता ग्रहण की तथा अब विश्व समुदाय से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण निर्यय इनके मत पर टिका होना है।

भारत ने इस बात के विरूद्ध आवाज उठाते हुए कहा है कि आज विश्व की जनसंख्या की बढ़ गई है। राष्ट्रों की संख्या में भी वृद्धि हुई है तथा 1945 की परिस्थितियों से आज की परिस्थितियां भिन्न हैं। इसलिए सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यों की संख्या बढे तथा इसमें एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका के देशों को जगह मिले।

भारत की इस मांग का अन्य विकासशील देश भी समर्थन कर रहे हैं तथा विश्व जनमत भी भारत के साथ है। इसलिए जल्द ही भारत अपनी मांगों को मनवाने व सुरक्षा परिषद में सुधार करवाने में सफल होगा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति आरंभ से लेकर अब तक एक जिम्मेवार सदस्य की भूमिका निभायी है तथा प्रत्येक स्तर पर संयुक्त राष्ट्र के सिद्धान्तों व उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की है। यह संयुक्त राष्ट्र को एक मजबूत अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में समर्थन प्रदान करता है। यू0एन0ओ0 ने भी भारत

की भूमिका की विभिन्न मंचों पर से सराहना की है तथा भारत को विश्व समुदाय का एक जिम्मेवार वर्ग बताया है। संयुक्त राष्ट्र ने आंतकवाद के मुद्दे पर सदैव भारत के मत का समर्थन किया है तथा भारत द्वारा पेश सभी महत्वपूर्ण प्रस्तावों को स्वीकार किया है। इस प्रकार भारत व यू0एन0ओ0 एक दूसरे के पूरक की भूमिका निभाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति – वी.पी. दत्त, पृ0 सं0 364.
2. आर.सी. वरमानी, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, गीतांजली पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली,
3. आर.एस.यादव, भारत की विदेश नीति, पीयरसन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. बी.एल.फाड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, साहित्य भवन, पब्लिकेशन्स, जयपुर।